जल स्रोतों में तालाबों का महत्व

संजय गोस्वामी

जल स्रोत नष्ट होते जा रहे हैं। इस समय देश में पानी की भारी कमी है। यदि सरकार और जनता तालाब निर्माण की ओर एक बार जागृत हो जाए तो संभवत पानी की कमी दूर की जा सकती है। मत्स्यपुराण में कहा गया है कि दस कुओं के बराबर एक बावड़ी, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है।

महाभारतकालीन तालाबों में कुरुक्षेत्र का ब्रह्म सरोवर, करनाल की कर्ण झील और मेरठ के पास हस्तिनापुर का शुक्र ताल आज भी है रामायण और महाभारत काल को छाड़ दें तो पांचवी सदी से पंद्रहवी सदी तक देश में तालाब बनते ही जा रहे थे। रीवा रियासत में पिछली सदी में 5,000 तालाब थे। वर्ष 1847 तक मद्रास प्रेसीडेंसी में 53,000 तालाब थे। वर्ष 1980 तक मैसूर राज्य में 39,000 तालाब थे। अंगरेजों के आने से पहले दिल्ली में 350 तालाब थे, जिनमे से अधिकांश अब लुप्त हो चुके हैं। भोपाल का तालाब अपनी विशालता के कारण देश में मशहूर था। इसे ग्यारहवीं सदी में राजा भोज ने बनवाया था। पच्चीस वर्ग मील में फैले इस तालाब में 365 नालों–नदियों का पानी भरता था। मालवा के शाह होशंगशाह ने 15वीं सदी में इसे सामरिक कारणों से तुड़वाया तो तीन वर्ष तक पानी निकाले जाने के बाद उसका तल दिखाई दिया। इसके बाद दलदल 30 वर्षो तक बना रहा। जब यह सूख गया, तब इसमें खेती आरंभ की गई। वर्ष 1335 में महाराज घड़सी ने जैसलमेर में 120 वर्ग मील लंबा–चौड़ा घड़सीसर खुदवाया था। बंगाल में पोखरों की उज्वल परंपरा हैं। उन पोखरों में मछलियां भी पाली जाती हैं। हालांकि अब वहां भी पोखर कम होते जा रहे हैं, जिस कारण मछली उत्पादन भी प्रभावित हुआ है। एक समय था, जब देश में तालाब बनाने की होड़–सी लगी रहती थी। तालाब की जगह का चुनाव बुलई करते थे। गजधर जमीन की पैमाइश करते थे।

यही कारण है कि तालाब खुदवाने की जगह पाटने की सूचनाएं ज्यादा मिलती हैं। लोग पीने तथा सिंचाई के लिए ट्यूबवेल, पंपसेट, हैंडपंप आदि पर जोर देते है, लेकिन तालाब का महत्व नहीं समझतें।

जल स्रोत नष्ट होते जा रहे हैं। इस समय देश में पानी की भारी कमी है। यदि सरकार और जनता तालाब निर्माण की ओर एक बार जागृत हो जाए तो संभवत पानी की कमी दूर की जा सकती है। मत्स्यपुराण में कहा गया है– दस कुओं के बराबर एक बावड़ी, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है।

दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब

जल स्रोतों में नदियों के बाद तालाबों का सबसे ज्यादा महत्व है। तालाबों से सभी जीव–जंतु अपनी प्यास बुझाते हैं। किसान तालाबों से खेतों की सिंचाई करते रहे हैं।

जल स्रोतों में नदियों के बाद तालाबों का सबसे ज्यादा महत्व है। तालाबों से सभी जीव–जंतु अपनी प्यास बुझाते हैं। किसान तालाबों से खेतों की सिंचाई करते रहे हैं। हमारे देश में आज भी सिंचाई के आधुनिकतम संसाधनों की भारी कमी है। ऐसे में किसान वर्षा और तालाब के जल पर निर्भर हैं, लेकिन तालाबों की निरंतर कमी होती जा रही है। लगता है कि हम तालाबों के महत्व को भूलते जा रहे हैं। देश में 6,38,368 गांव हैं। इनमें से डेढ़ लाख से भी अधिक गांवों में पेयजल की किल्लत है। लगभग 72 प्रतिशत छोटे और सीमांत किसानों की फसलें पानी की कमी के कारण ठीक तरह फल–फूल नहीं पातीं। नदियों से निकलने वाली नहरों को न तो चौड़ा किया जा रहा है और न ही उनकी साफ–सफाई हो रही है। नतीजतन उनका वजूद मिटता जा रहा है। इसके अलावा देश में कई राज्य और पहाड़ी क्षेत्र ऐसे हैं, जहां नहरें हैं ही नहीं। हैं भी तो अपर्याप्त। वर्षा जल या किसी झरने के पानी को रोकने के लिए बनाए जाने वाले तालाबों का प्रचलन अत्यधिक प्राचीन है। निचली धरती पर पानी भर जाने से कुछ तालाब अपने आप बन जाते रहे हैं। रामायण काल के तालाबों में श्रृंगवेरपुर का तालाब प्रसिद्ध रहा है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के निदेशक डॉ. बी.वी. लाल ने पुराने साक्ष्य के आधार पर इलाहाबाद से 60 किलोमीटर दूर खुदाई कर इस तालाब को खोजा है। यह तालाब ईसा पूर्व सातवीं सदी का बना हुआ है।

संजय गोस्वामी
डब्ल्यू. आई.पी., बी.ए.आर. सी.,
मुम्बई–85

तकनीकी पत्रिका

जल चेतना

सदस्यता फार्म

सेवा में,

संपादक
तकनीकी पत्रिका "जल चेतना"
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन, रूड़की–247667 (यू.के.)

महोदया,

आपके संस्थान द्वारा प्रकाशित पत्रिका "जल चेतना" का .....माह,..... का अंक प्राप्त हुआ/संज्ञान में आया। पत्रिका की विषय वस्तु व सामग्री मेरे/हमारी संस्था के लिये अत्यन्त उपयोगी है। अतः आपसे अनुरोध है कि मेरा/हमारी संस्था का नाम "जल चेतना" पत्रिका के सदस्यों की सूचि में शामिल करने का कष्ट करें।

मेरा पता निम्न है :

पूरा नाम (साफ अक्षरों में) .....
पूरा पता .....
.....
डाकघर.....**जिला**.....
राज्य.....**पिन कोड**.....
टेलीफोन नं.....**मोबाइल नं**.....
ई–मेल.....

हस्ताक्षर